सतनाम
रामईया
रामईया
सतनाम:
एक ओंकार सतिगुरू प्रसादि
गुर दा पैगाम
आत्मा दे नाल !
रूहानी सतसंग
शुद्ध
तथास्तु
तप: तपो
नमो नम:
मेरे अपने
सच्चे साहिब जी
जो न भजते नारायणा
तिन का मै न करउं दरशना
हक
हक
कृपया अम्ल कर व्यवहारिक बने। ताकी समर्थ हो कर आगे बढ़ा जा सके।

"गुरू"

- जे सउ चंदा उगवह - सूरज चड़ह हजार । एते चानण होदिआं - गुर बिन घोर अंधार ।
- जिस का ग्रिहु - तिन दीआ ताला - कुंजी गुर सउपाई । अनिक उपाव करे नही पावै - बिन सतिगुर सरणाई ।
- सासत-बेद-सिम्रित सभ सोधे - सभ एका बात पुकारी । बिन गुर मुकत न कोऊ पावै - मन वेखहु कर बीचारी ।

- बिन गुरू तत न पईऐ - अलख वसै सभ माह । सतिगुरू मिलै त जाणिऐ - जां सबद मन माह ।
- बिन सतिगुर भगत न होवई - नाम न लगै पिआर । जन नानक नाम आराधिआ - गुर कै हेत पिआर ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

गुरू साहब क्रिया कलापों के जरिये गुरू का गुण-गान करेंगें । गुरू साहब फरमाते हैं कि हम गुरू की महिमा का वर्णन मुख द्वारा नहीं कर सकते क्योंकि गुरू अपार शक्ति का मालिक होते हुए हमारा जन्मदाता और मार्ग दर्शक है । गुरू को परमात्मा से भी पहले माना जाता है ।

"गुरू गोबिंद दोऊ खड़े काके लागू पांव ।
बलिहारी गुरू आपणे गोबिंद दीओ मिलाये ।"

गुरू साहब बता रहे हैं कि गुरू ही परमात्मा है, गुरू ही प्रथम सीढ़ी है, गुरू ही प्रथम वंदना है, गुरू को जाणे बिना हम आगे नहीं चल सकते, गुरू को माथा टेके बिना परमात्मा की शरण में नहीं जाया जा सकता । परमात्मा को जानने के लिए गुरू की आवश्यकता है । गुरू ही बताता है कि परमात्मा है और कौन है ।

सबसे पहले गुरू की महिमा के बारे में इतना ही कहा जा सकता है कि उनकी महिमा अपरम्पार है । गुरू की ताकत को माँ के रूप में जाना जाता है । माँ जो अपने बच्चे को नौ महीने अपने पेट में पालती है और फिर 1600 जोड़ वाली हड्डियों वाले बच्चे को जन्म देती है और इतने सारे कष्टों को सहन करना तो केवल गुरू की कृपा से सम्भव हो सकता है । इसके अलावा माँ गुरू के रूप में बच्चे को जन्म ही नहीं देती बल्कि उसे अनजान से जानकार बनाती है । जहाँ वह बच्चा भाषा, संस्कार, समाज आदि बातें सीखता है । शिक्षा के बिना, गुरू कृपा से सम्भव नहीं है । "गुरू" परमात्मा के रूप में ताकत चिराग और रोशनी देता है । और उसी रोशनी को प्राप्त करना ही जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होना है । गुरू का रूप पिता का रूप है वह भी संसार में कोई कसर नहीं छोड़ता और हर सम्भव कोशिश करता है कि उसके परिवार की परवरिश में कोई कमी नहीं रह जाये ।

आगे चल कर रूह को प्रगट रूपी गुरू की जरूरत पड़ती है । सतगुरू परमात्मा का रूप है इसीलिये सतिगुरू के मिलाने पर अंतर में प्रेम की लहरें उठती हैं, परन्तु मनुष्य का मन अनन्त जन्मों के कर्मों और संस्कारों के कारण बहुत मलिन हो चुका है इसलिये यह सतगुरू से मिलने के बाद भी यह पहले की ही तरह इन्द्रियों के भोगों और विषयों विकारों की ओर आकर्षित होता है।

सतगुरू ही मनुष्य को विलासिता के जीवन से बाहर निकाल सकता है ।

अब प्रश्न यह उठता है कि उस रोशनी को कैसे प्राप्त किया जाए ? सबसे पहले मन को अन्दर और बाहर से साफ रख कर हमें गुरू के बचनों के प्रति कुर्बान होना पड़ेगा, क्योंकि बाहर की सफाई से अन्दर की सफाई नहीं हो सकती है । हमें गुरू के बचनों पर चलना है । गुरू के 1000 बचन हैं परन्तु हम 999 बचनों को तो भूल जाते हैं और एक बचन को याद रखते हैं कि गुरू ने कहा था कि भजन करना है और बाकी सभ भूल जाते हैं जब हम गुरू के बाकी 999 बचन याद रखेंगें तब ही तो हमारा भजन पूर्ण होगा । भजन तभी बनेगा जब अपनी हस्ती गुरू के बचनों पर कुर्बान कर दोगे या अपने आपको गुरू पर न्यौछावर कर दोगे ।

गुरू जब धुर दरगाह से आता है तो वह अपनी रूह की आजादी के लिए, क्योंकि सदियों से यह रूह पंच विकारों में फँसी हुई है यह विकार हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ।

1. काम - शक्ति को नष्ट करता है मन को मलिन करता है विवेक का नष्ट (ह्रास) होता है और परमार्थ का सत्यानाश कर देता है ।

2.क्रोध - क्रोध बड़ा चंडाल है इससे ख्याल फैलता है और बुद्धि भ्रष्ट होती है ।

3.लोभ - व्यक्ति को नीच अधर्मी बनाता है ।

4.मोह -मोह तो महाबली है यह तो विवेक और बुद्धि का षत्रु है ।

5.अहंकार - तो जीव को अंधा कर देता है और वह जीव को भले बुरे या मित्र-शत्रु को पहचानने की तमीज भी नहीं रहने देता ।

गुरू और गुरू के बचन जीव का आधार हैं जीवात्मा नरकों और मन की चालों में फँसी होने के कारण कोयले के समान है । जो कि जमीन में लाखों सालों से दबा पड़ा है जिसे उस गुरू ने उस खान में से निकाल कर साफ करना है और उसका रूप परिवर्तन करना है उसके गुण को संवार कर हीरा बनाना है । जब तक गुरू जीव का उद्धार नहीं करते तब तक जीव भटकता रहता है । वह विकारों और बाहरी क्रिया कलापों में मस्त रहता है जिससे उसकी मुक्ति नहीं होती । गुरू कोयले को हीरा बनाने आया है, जीव को गुरू के बताये हुए रास्ते पर चलना है गुरू के बचनों को मानना है जिस तरह शेर को देखकर गीदड़ भाग जाता है, उसी तरह परिवार, माया, लोभ, मोह आदि यह गीदड़ हैं जो गुरू द्वारा दिये गये मन रूपी शेर के सामने टिक नहीं पाता क्योंकि गुरू ही तो प्रकाश देकर मन को शेर बनाता है । गुरू के प्रकाश दिखाने के बाद नौ द्वारों से निकल कर दसवें द्वारे पर पहुँचना पड़ेगा और

उसके बाद किसी सत्संग की जरूरत नहीं पड़ेगी और बार-बार जनम-मरन से मुक्ति मिल जायेगी ।

गुरू मंत्र देता है उसे जपने का तरीका बताता है गुरू ने जाप करने का समय सुबह 2.00 बजे से 4.00 बजे तक का बताया है । गुरू के मंत्र का जाप करने से परमात्मा में ध्यान लगाने से सब विकार भाग जाते हैं और रोशनी प्रगट होती है जीव में एक उत्साह पैदा होता है । जीवात्मा को धुर-दरगाह ले जाने के लिए गुरू ईसा मसीह जी आए, गुरू अर्जन देव जी आये और गुरू गोबिंद सिंह जी आये । सब गुरूओं ने परमात्मा को मिलने का जो रास्ता है उसी पर जोर डाला। गुरू स्वंय कहता है कि तूं मेरे जोगा, ते मैं तेरे जोगा । अर्थात तूने मुझे अपना सब कुछ दे दिया तो उसकी सम्भाल मैंने करनी है । गुरू पूर्ण सच है गुरू के बचनों को मानना है गुरू में 16 सूरज प्रगट हैं पूर्ण परमात्मा का रूप है गुरू की पहचान करनी है गुरू के तेज रूपी रूप को पहचानना है अर्थात उस रूप का ध्यान करना है ।